7

परमेश्वर के प्रेम का बंधुआ

(2 कुरिन्थियों 5:11-27)

''सो हम मसीह के राजदूत हैं ...''(5:20)।

कुरिन्थी लोगों ने पहले ये शब्द सुने हुए थे कि ''एक सबके लिए मरा'' (5:14)। वास्तव में यीशु मसीह के बारे में इनसे बहुत मिलते-जुलते पहले शब्द कुरिन्थियों ने सुने थे (तुलना 1 कुरिन्थियों 15:3)। कुरिन्थिस में पौलुस के पहली बार जाने पर यह सरल संदेश से उन्होंने यीशु मसीही के आज्ञा मानी थी अपनी मिशनरी यात्राओं में पौलुस जहां भी गया उसके संदेश में एक बात हमेशा होती थी कि, ''एक सबके लिए मरा'' या ''मसीह हमारे पापों के लिए मरा।'' मसीही कहानी को उन्हीं शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है।

यदि कुरिन्थियों ने पहले कई बार यह शब्द सुने हुए थे तो हमें पूछना आवश्यक है कि पौलुस को 5:14 में इस सारांश में जाने की क्या आवश्यकता थी। पौलुस अपने काम के अपने बचाव के मध्य में है। पूरा भाग अर्थात 2:14-7:4 उन आलोचकों के विरोध में जो कहते हैं कि पौलुस मसीह का सच्चा सेवक नहीं है, उसकी सफाई है। फिर अचानक 5:14 में पौलुस उन शब्दों में जिन्हें हर मसीही को याद कर लेना चाहिए, ''एक सबके लिए मरा'' में पासा फेंकता है। पर वह कुरिन्थियों को अपना संदेश याद दिलाने के साथ बन्द नहीं करता। 5:15-19 में वह नये शब्दों में संदेश को संक्षिप्त करने लगता है। 5:19 के शब्द ''परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया'' नये नियम में कहीं पर भी मसीही कहानी का सबसे शक्तिशाली वाक्य हो सकता है। शायद मसीही लोगों को यह शब्द जबानी याद भी थे। वे इतनी शक्ति से गूंजते हैं कि हम मंडलियों के उन्हें लगतार आराधना में उन्हें दोहराने की कल्पना कर सकते हैं। हम मसीही लोगों से अपने विश्वास का सार पूछे जाने पर यह कहने की कल्पना कर सकते हैं कि ''परमेश्वर ने मसीही में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया'' या ''मसीह हमारे पापों के लिए मर गया'' कहते थे। शायद वे 5:21 के शब्दों के साथ उत्तर देते थे: ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होरक परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।'' हमें यह प्रभाव मिलता है कि दूसरे लोग यह बहस करना चाहते हैं कि कौन असली मसीही हैं और पौलुस अपना सबसे भारी असलाह चला देता है।

कि तुम उत्तर दे सको (5:11, 12)

''असली मसीही कौन है'' के प्रश्न से विश्वास के उन सारों का क्या सम्बन्ध है ? कुरिन्थिस के लोग घबराए हुए थे क्योंकि दूसरे लोग मसीही विश्वास का अपना नया विचार लेकर आए थे। वास्तव में अपने आपको मसीही के असली सेवक होने का दावा करने वालों के उलटे दावों

को सुनने के बाद उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या विश्वास करें। कुछ लोग "अपने आप को" दूसरों के विरुद्ध "गिनते" हैं (10:12) और उनका न्याय बाहरी रूप को देखकर करते हैं (5:12)। स्पष्टतया वे यह बहस करते हुए कि मसीही के असली सेवकों की पहचान सामर्थ के दिखाई देने वाले निशानों से हो सकती है, आत्मा का दान होने का दावा करते थे। पौलुस जैसे अप्रभावशाली व्यक्ति को आत्मा नहीं मिला हो सकता क्योंकि उसके पास इसे दिखाने की कोई सामर्थ नहीं है! पौलुस को इस आरोप के विरोध कि वह "सांसारिक" या "भौतिक" व्यक्ति है, अपना बचाव करना आवश्यक है (1:17; 5:16; 10:3, 4)।

पौलुस अपने सम्मान की खातिर अपने आलोचकों के सामने अपनी सफाई नहीं देता। वह देखता है कि यदि उन्हें कोई जवाब नहीं दिया जाता तो कुरिन्थी आसानी से रास्ता भटक जाएंगे। पूरी कलीसिया को समझ होनी और पता होना आवश्यक है। पौलुस कहता है, "... परमेश्वर पर हमारा हाल प्रकट है; और मेरी आशा यह है, कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रकट हुआ होगा" (5:11)। फिर उसने आगे कहा, "हम फिर भी अपनी बड़ाई तुम्हारे साम्हने नहीं करते वरन हम अपने विषय में तुम्हें घमण्ड करने का अवसर देते हैं, कि तुम उन्हें उत्तर दे सको, जो मन पर नहीं, वरन दिखावटी बातों पर घमण्ड करते हैं" (5:12)। असूचित कलीसिया मसीही विश्वास के प्रतिद्वंद्वी संस्करणों के विरुद्ध सफाई नहीं दे पाएगी! बिना उत्तरों के मसीही व्यक्ति को पता ही नहीं है कि मसीही की पहचान क्या है।

कलीसिया में गम्भीर प्रश्नों के समाधान के लिए पौलुस द्वारा दिए गए नूमनों से बड़ा कोई नहीं है। कुरिन्थिस की कलीसिया ने कई बार "एक सबके लिए मरा" शब्दों को सुना तो था परउन्हें उस संदेश को दोबारा सुनने की आवश्यकता थी। विवाद वाली किसी बात का उत्तर देने के लिए पौलुस का ढंग हमें अजीब लग सकता है। हम व्यहारिक लोग हैं और हो सकता है कि हमारी रुचि अधिक जो "सही" है उसके बजाय जो "काम करे" या परिणाम दे, में हो सकती है। इसके अलावा हमें नये-नये विचार इतने अच्छे लगते हैं कि हम आसानी से यह निर्णय ले लेते हैं कि यह संदेश पुराना पड़ गया है और इसे दोहराए जाने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु पौलुस तो पुराने संदेश को कठिन समय में लेकर आता है क्योंकि यह ही यह तय करने का एकमात्र मानदण्ड है कि मसीही की पहचान क्या है। लड़ाई के लिए हमारा उपाय उसकी कहानी है, जो सबके लिए मरा।

रिचर्ड निहाउस ने फ्रीडम फ़ॉर मिनिस्टरी में लिखा कि "अमेरिका की 3,000 और इससे अधिक स्थानीय कलीसियाओं में सेवकाई में लगभग हर बात पाई जा सकती है।"[1] सेवकाई के अलग-अलग ढंगों से यह स्पष्ट है कि कुछ कार्यक्रम परमेश्वर के लोगों के लिए उपयोगी है और कुछ नहीं। जब कलीसिया के अगुवे कई वैकल्पिक कार्यक्रमों को देखते हैं तो वे यह तय कैसे करते हैं कि कौन वास्तव में मसीही का काम कर रहा है? क्या पारिवारिक जीवन के कार्यक्रम को आरम्भ करने, नई इमारत बनाने या परेशान लोगों समझाने का तरीका है? मूल कहानी में बिना संसाधनों वाली कलीसिया के पास कोई दिशा नहीं है।

यह कहानी हमारी कहानी है (5:13-15)

मसीही व्यक्ति की पहचान केवल सही बातें करने में ही नहीं है क्योंकि सही शब्दों के भी

अर्थहीन वाक्यांश हो सकते हैं। 5:13, 14 में पौलुस दिखाता है कि ''एक सबके लिए मरा'' शब्द उसके लिए अर्थहीन नहीं थे। जब उसने समझाना चाहा कि उसके काम से उन्हें संतुष्टि क्यों नहीं मिली जो उसे बाहर रूप देखकर अप्रभावी मानते थे, तो उसने अपने जीवन पर ''एक सबके लिए मरा,'' शब्दों के प्रभाव को याद किया। हमें उन नियमों से एक प्रभाव मिलता है जिनसे पौलुस का काम तय हुआ जब उसने कहा, ''यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के लिए; और यदि चैतन्य हैं, तो तुम्हारे लिए हैं'' (5:13)। शायद पौलुस ने मूल नियम बता दिए जिनके द्वारा उसने काम किया क्योंकि दूसरों ने कहा था कि वह ''चैतन्य'' है। (में ''गम्भीर'' है) और केवल ''उल्लासित'' नहीं। ''बेसुध'' के लिए शब्द मूलतया ''उल्लासित'' (*exestemen*) है। पौलुस उत्तर देता है, ''यदि मैं बेसुध हूं तो यह बेसुधि परमेश्वर और मेरे बीच में है, मैं अपने आपको बढ़ाने के लिए दूसरों के सामने अपनी प्राप्तियों का ढिंढोरा नहीं पीटता।'' पौलुस ''नंबर वन बनने की इच्छा'' नहीं रखता। उसकी सेवकाई ''परमेश्वर के लिए'' और ''दूसरों के लिए'' है। परमेश्वर के सेवक की पहचान स्वार्थ और घमण्ड को त्यागना होता है।

अपनी और हमारी संस्कृति के मानक को नकारने के लिए पौलुस क्या कर पाया। 5:14 में वह उत्तर देता है, ''क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है।'' ''विवश कर देता'' (*syn-echei*) शब्द चौकाने वाला है। इसका अर्थ ''हिरासत में लेना'' या ''आगे चलाना'' है। यह शब्द कैदी के लिए इस्तेमाल किया जाता था, जिसे बड़े अधिकारी द्वारा हिरासत में रखा गया हो। पौलुस को मसीह के प्रेम द्वारा ''पकड़ा गया'' और ''हिरासत में लिया गया'' था। वह दूसरों से अलग देखता और काम करता है क्योंकि वह इस प्रेम से अभिभूत है। वह निःस्वार्थ प्रेम से कार्य करता है क्योंकि प्रेम अब उसे विवश करता है।

पौलुस अभिभूत करने वाले इस प्रेम की बात एक और जगह करता है: ''परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:8)। ''कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है?'' वह पूछता है (रोमियों 8:35)। वह व्यक्तिगत रूप से इस बात से प्रभावित है कि उससे प्रेम किया गया था। इसी तथ्य ने उसकी सेवकाई को आकार दिया।

उस प्रेम को याद करते हुए जो उसे विवश करता था और उसने क्रूस पर विचार किया। अब हमें समझ आता है कि क्यों। मसीह के असली और नकली सेवकों पर चर्चा में उसने पुराने शब्द दोहराए, ''वह सबके लिए मरा।'' यह वाक्यांश अर्थहीन ठप्पा नहीं है। वह प्रतिदिन इस बात को याद करता था कि मसीहियत का आरम्भ निःस्वार्थ प्रेम के कार्य से हुआ जब यीशु मसीह ने स्वार्थ के मानक को नकार दिया था। विश्वास का सार सरल शब्द ''के लिए'' में है। वह हमारे पापों ''के लिए'' (1 कुरिन्थियों 15:3) और ''भक्तिहीनों के लिए'' (रोमियों 5:6) मरा।

यदि यीशु निःस्वार्थ था, तो मसीह व्यक्ति की पहचान क्या है? पौलुस उत्तर देता है, ''... जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिए मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जो उन के लिए मरा और फिर जी उठा'' (5:14, 15)। मसीही की पहचान यह है कि वह अपनी प्राप्तियों, प्रतिष्ठा या प्रसिद्धि का गर्व नहीं करता। जो लोग मसीही के हैं उनकी दूसरों के लिए जीने की इच्छा उन्हें अलग करती है।

यदि हम कुरिन्थियों के साथ पौलुस की बातचीत को ''सुनें'' तो हमारे सामने अपनी

प्राथमिकताओं को तय करने के ढंग पर नये सवाल खड़े हो जाएंगे। हम कितनी बार अपनी दिशा को जानने के लिए उन मूल शब्दों "एक सबके लिए मरा" में वापस जाते हैं? क्या हम ऐसे अगुओं का चयन करते हैं जिनकी पहचान यह है कि वे "अब अपने लिए नहीं जीते"? कुरिन्थियों की तरह हमारे सामने भी परीक्षाएं आती हैं। जो दिखने में बड़ी प्रभावशाली हैं। कइयों के लिए प्रामाणिक कलीसिया की पहचान दिखाई देने वाली सफलता है। हम ऐसी सेवकाइयों का चयन कर सकते हैं जो हमें "तस्वीर में ले आएं।" परन्तु यदि हम अपनी दिशा का पता लगाने के लिए यीशु के नमूने में वापस जाते रहें तो हम उसके ढंग से "विवश कर दिए" जाएंगे। वर्नर एलर ने ठीक ही कहा है कि मसीह हमें बुलाता है, सफल होने के लिए नहीं, बल्कि विश्वास योग्य बनने के लिए।[2]

परमेश्वर का नया संसार (5:16, 17)

सम्भावना रहती ही है कि हम बिना यह समझे कि हमारे जीवनों पर उनका क्या असर होगा हफ्ते दर हफ्ते अपने विश्वास की मुख्य बातों को दोहराते रहें। मुझे शाम की एक आराधना सभा का स्मरण आता है जहां प्रचारक के संदेश में सुनने वालों की एक आवाज़ से रुकावट पड़ गई जिसमें कहा गया था, "तो?" यह प्रश्न प्रचारक और श्रोताओं दोनों के लिए परेशान करने वाला था और जहां यह किया गया था वहां उपयुक्त नहीं था। परन्तु इस घटना ने मुझे याद दिलाया कि पुरानी कहानी का "तो?" है, क्योंकि यह हमारे जीवनों में अन्तर लाता है। हमारी सेवकाइयां क्रूस की कहानी से प्रभावित हुए बिना "सामान्य की भांति" चल सकती हैं। 5:16, 17 में पौलुस का "सो" दिखाता है कि वह उस "एक सबके लिए मरा" को दोहराकर संतुष्ट नहीं था। उस कहानी ने उसकी सेवकाई में फर्क डाला है, जैसा कि 5:16, 17 में दो समानांतर वाक्यों से पता चलता है।

5:16, 17 की बात क्रूसारोहण यानी उस घटना की बात है जो मानवीय मानकों से मूर्खता है, और इसने पौलुस को संसार को देखने का बिल्कुल ही नया अंदाज दे दिया है। "अब से" मसीह में नये अनुभव की बात है जिसने उसे बदल दिया है। अब वह किसी को "मानवीय दृष्टिकोण" (*kata sarka*; NEB, "सांसारिक मानकों से") से नहीं "मानता" (या "जानता")। क्रूस का अर्थ सांसारिक मानकों का अन्त है क्योंकि इसमें संसार और यीशु मसीह को देखने का तरीका बिल्कुल नया तरीका है। यह बात 5:17 में ज़बर्दस्त ढंग से बताई गई है। NEB में 5:17 का अनुवाद है, "जब कोई मसीह में एक हो जाता है तो पूरा नया संसार होता है।" जैसा RSV के अनुवाद में है कि जो मसीह के साथ जुड़ गया वह "एक नई सृष्टि है।" परन्तु यूनानी का अनुवाद बड़ी आसानी से हो सकता है, मसीह व्यक्ति के लिए "एक नया संसार है," क्योंकि मसीह व्यक्ति संसार को नये तरीके से देखता है। जो मानक किसी समय महत्पूर्ण थे अब वे प्राथमिकता की चीजें नहीं रहीं। जो मूल्य किसी समय महत्व रखते थे अब अचानक वे बेकार हो चुके हैं। मूल्यों में यह परिवर्तन उस लाचार मनुष्य की कहानी में निकला है। जो क्रूस पर मर गया। उस कहानी का मेरे लिए कोई अर्थ है, इसलिए "अब से" मैं सेवकाइयों का मूल्यांकन परमेश्वर के मानकों के अनुसार करूंगा।

मसीह में पौलुस का नया "दृष्टिकोण" आज कलीसिया के जीवन में नाजुक मुद्दे उठाता

है। ऐसे समय में जब हम यह तय नहीं कर पाते कि किन सेवकाइयों की प्राथमिकता है, हमारे लिए यह पूछना उपयुक्त है कि क्या हमारे कार्यक्रमों में पौलुस के विरोधियों का ''मानवीय दृष्टिकोण'' दिखाई देता है या क्रूस का ''नया संसार।'' और सफल सेवकाई कैसे तय होती है? ''मानवीय दृष्टिकोण'' से पौलुस ने कई ''अफल'' सेवकाइयों पर ''अपना समय गंवाया।'' क्या सभी सेवकाइयों का मूल्यांकन ''अंकों'' के नियम से करना उपयुक्त है, जैसे ''हम नंबर देने'' के द्वारा अपनी सफलता को नाप सकते हों? दृष्टिकोण के ''नये संसार'' से, सफलता कभी किसी प्रकार के गुणात्मक स्कोर से नहीं नापी जाएगी, जैसे स्कूलों या लाभ हानि कॉलम में या किसी कॉर्पोरेशन में नापी जाती है।

मेरा विश्वास है कि कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम जो नये ''दृष्टिकोण'' से मेल खाते हैं, कभी उनका प्रचार नहीं किया जाता। आमतौर पर वे कठिन परिस्थितियों में किए जाते हैं जहां परिणाम प्रभावशाली नहीं होते। परन्तु उन्हें उन लोगों द्वारा किया जाता है जिन्होंने अपने आपकों दूसरों के लिए अर्पित कर दिया है। मुझे उन मिशनरियों का स्मरण आता है जिन्होंने वचन को न ग्रहण करने वाले क्षेत्रों और परिवारों में दशकों तक काम किया, जिन्होंने बदलते पड़ोस में कलीसिया पर छोड़ने से इनकार कर दिया। इनमें से कई लोगों के अपने प्रभावशाली होने को दिखाने के प्रभावी आंकड़े नहीं थे। जिन लोगों ने उन्हें मानवीय मानकों से नापा उन्हें उनमें असफता ही दिखाई दी। परन्तु इन लोगों ने सफलता के नाप के रूप में ''मानवीय दृष्टिकोण'' में फंसने से इनकार कर दिया।

यह किसकी सेवकाई है? (5:18-21)

हमारा स्वाभाविक अहंकार हमें ''मानवीय दृष्टिकोण'' से जीने का प्रलोभन देता है। हम पर उन कार्यक्रमों को देखने का प्रलोभन आता है, जो *हमें* बढ़ाते और अपनी प्राप्तियों में घमण्ड करने का कारण देते हैं। हम पर सही सेवकाइयों से बचने का भी प्रलोभन आता है, जिनमें सफलता की अधिक क्षमता नहीं होती। जब हम ''सबसे बड़ी'' कलीसिया पाना या ''सबसे प्रतिष्ठित'' कलीसिया की सेवा करने की इच्छा करते हैं तो हमारा स्वाभाविक अहंकार दांव पर होता है। सवाल उठाने का समय है, विशेषकर जब हम अपने ही अहंकार में फंसते हैं कि यह किसी सेवकाई है?

5:18, 19 में पौलुस इस प्रश्न का उत्तर देता है। ज़ोर इस तथ्य पर है कि ''यह सब परमेश्वर की ओर से है।'' हमें याद दिलाने के लिए कि यह ''परमेश्वर की ओर से'' है, 5:14 की तरह 18 और 19 आयतों में वह मसीही कहानी का समापन करता है। दो समानांतर वाक्यों में वह कहता है कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा और मसीह में (5:18) ''हमें अपने साथ मिला लिया'' (5:19)। यानी परमेश्वर की पहल से ही कहानी का आरम्भ हुआ। उसके साथ अपने आप को बहाल करने में हमने कुछ नहीं किया।

क्रूस की कहानी बताते हुए पौलुस ने यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर ने क्या किया है एक चौकाने वाले रूपक का इस्तेमाल किया, जिसका इस्तेमाल पौलुस बहुत कम करता है। क्रूस पर परमेश्वर ने हमें अपने साथ ''मिला लिया।'' यह शब्द अलग होने के समय के बाद सुलह और मेल की बहाली का संकेत देता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 7:11)। यह शब्द हमें इब्रानी अभिवादन

शालोम का स्मरण दिलाता है, जो आमतौर पर एक-दूसरे से मिलने पर किया जाता था। इस शब्द का अर्थ है ''शान्ति,'' परन्तु इसका अर्थ शत्रुता के न होने से बढ़कर है। इसमें एकता और पूर्णता के अनुभव का संकेत था। परमेश्वर ने मसीह के द्वारा वह किया जो हमारी पहल से नहीं हो सकता था। यानी उसने हमें *शालोम* बहाल कर दिया। जैसा रोमियों 5:1 में पौलुस कहता है ''अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें''। ''बैरी'' होने के बाद ''उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ'' (रोमियों 5:10)। यह उस बात को जो पहले कही गई थी (5:14) कहने का अलग ढंग था कि ''एक सबके लिए मरा।'' यह परमेश्वर की कहानी है, हमारी नहीं।

परन्तु दूसरों को यह कहानी कैसे पता चलेगी? 5:18-20 में पौलुस ने जहां भी कहानी को संक्षिप्त किया है (''परमेश्वर ने हमारा मेल-मिलाप कर लिया''), उसने उनका भी उल्लेख किया, जिन्हें परमेश्वर ने यह कहानी सौंपी है, यदि परमेश्वर ने हमें मिला लिया है तो हम ''मेल मिलाप की सेवा'' लेते हैं (5:18)। 5:18 के अनुसार हमारी सेवकाई एक *दान* है (''मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है'')। 5:19 के अनुसार यह एक ''भरोसा'' है। यह हमारी सेवकाई नहीं है कि हम जैसा चाहें करें। सही कार्यक्रमों का एक-दूसरे से कभी मुकाबला नहीं होता। वास्तव में हर असली सेवकाई ''मेल-मिलाप की सेवा'' होने के लिए होती है।

आधुनिक सेवकाइयों बेशक कई बार नाकाम हो जाती हैं क्योंकि उनमें दिशा और अर्थ नहीं होता। पौलुस को ऐसी दिशा की कमी नहीं थी। ''मेल-मिलाप की सेवा'' होने के कारण उसकी सेवकाई में किसी अर्थ की कमी नहीं थी। उसकी सेवकाई का हर कार्य और हर पहलू परमेश्वर और मनुष्य में *शालोम* अर्थात मेल लाने की दिशा में था। वह मसीह का ''दूत'' है (5:20)। ''दूत'' शब्द सेवकाई (यानी ''गुलाम,'' 4:5; ''सेवक,'' 6:4) के लिए अन्य कुछ शब्दों के विपरीत बड़ा प्रतिष्ठा वाला शब्द था। पौलुस के समय में, हमारे समय की तरह दूत को अपने लीडर की ओर से बोलने का पूरा अधिकार होता था। जिन लोगों के साथ वह बात करता था उन्हें मालूम होता था कि उसकी बातें वास्तव में उसके शासक की बातें हैं। जब शान्ति के लिए काम करता, तो उसके पीछे सम्राट का पूरा अधिकार होता था। इस कारण पौलुस दूसरों से परमेश्वर की ''शान्ति'' को स्वीकार करने की याचना करता है, यानी सेवक के द्वारा याचना करने वाला परमेश्वर ही है।

सारांश

उस समय पर जब कलीसिया की सेवकाई के फोकस पर बहुत बहस होती थी, कहे गए पौलुस के शब्द आज सुने जाने चाहिए। अपने कार्यक्रमों के लिए दिशा और उद्देश्य के लिए हम जहां भी देखें इस आवश्यक तथ्य को नज़र अंदाज़ नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर की ''मेल-मिलाप की बात'' उसके सेवकों को सौंपी गई है। कलीसिया जब यह भूल जाती है कि इसका अस्तित्व दूसरों से ''परमेश्वर से मेल-मिलाप करने'' को कहने के लिए है, तो यह अपना मार्ग भटक जाती है। ''सच्ची कलीसिया'' बार-बार उस साधारण सी कहानी में वापस आती है जिसने उसे जीवन के लिए बुलाया: ''एक सबके लिए मरा, इसलिए सब मरते हैं।'' यदि हम केवल ''मानवीय दृष्टिकोण से'' बात या काम करें तो हम अस्तित्व के अपने कारण को खो

देंगे। वास्वत में हम ‘‘मानवीय दृष्टिकोण से’’ सफल हो सकते हैं पर अपना रास्ता भटक सकते हैं। हर पीढ़ी में यह पूछने की ज़बर्दस्त पुकार है कि क्या हमारी सेवकाई मूल्यों के परमेश्वर के ‘‘नये संसार’’ की झलक है ?

टिप्पणियां

[1]रिचर्ड जॉन नैहोस, *फ्रीडम फॉर मिनिस्टरी* (न्यू यॉर्क: हार्पर, 1979), 35. [2]वर्नर एलर, *आउटवर्ड बाउंड* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस, 1930), 47.